पेरिस
६ फरवरी २००६

संदेश संख्या – ८८

सद्गुरू मन्त्र

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षीभूतम्
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तं नमामि ।

इस सुन्दर मन्त्र का मर्म नीचे दिया जा रहा है । यह अनुवाद नहीं है क्योंकि अनुवाद सत्य नहीं होता । अनुवाद व्यक्ति के अतीत के अनुकूलन पर आधारित, उसके पूर्वकल्पित विचारों एवं पूर्वनिर्धारित निष्कर्षों के ढाँचे में केवल सामंजस्य होता है ।

अहा ! समझदारी की अस्तित्वमय ऊर्जा को, जो विभेदकारी शरीरी चेतना के अन्धकार को दूर करती है (सद्गुरूम्), प्रणाम है। समझदारी की यह ऊर्जा, सत्व–रज–तम रूपी तीन वर्गों में विभाजित शरीरी–चेतना के अवयवों से मुक्त तथा उसके परे है (त्रिगुणरहितम्)। यह सभी मनोवृत्तियों एवं भावनाओं से परे है (भावातीतम्) । यह ऊर्जा सर्वदा पूर्णरूपेण जागृत होती है और इसलिए स्मृति के तकनीकी अनुभव–संरचना में कोई भी मानसिक निबंधन नहीं होता और इस तरह साक्षीत्व में केवल यथार्थता रूपी जागृति की गतिशीलता होती है (सर्वधीसाक्षीभूतम्), न कि क्षुद्र मन की मान्यताओं, आरोपणों और कपोल–कल्पनाओं की चालबाजी ।

यह खण्डित शरीरी चेतना के दोष से रहित है (विमलम्), और इसलिए अत्यन्त स्थिर एवं शान्त है (अचलम्) । जागृति की यह अस्तित्वमय ऊर्जा आदि और अन्तरहित है (नित्यम्) । यह 'एकाकीपन' अर्थात ''सर्व–एकता'' है जो अकेलापन के अलगाव से रहित होता है (एकम्) और यह अलगाव आत्मकेन्द्रित गतिविधियों के कारण होता है ।

इस ऊर्जा को चार महावाक्यों में बताया गया है (तत्वमस्यादिलक्ष्यम्)।
ये चार महावाक्य हैं :–

प्रज्ञानंब्रह्म	:	सचेतनता जागृति है ।
अहं ब्रह्मास्मि	:	यथार्थ ''मैं'' जागृति है ।
तत्वमसि	:	यथार्थ ''तुम'' जागृति हो ।
अयमात्मा ब्रह्म	:	सभी चीजों का सारतत्व जागृति है ।

यह चिति–शक्ति अर्थात् अखण्ड चैतन्य ही शून्यता, पूर्णता और पवित्रता है (गगनसदृशम्) । सृष्टि के विस्मयकारी एवं रहस्यमयी विविधता के बावजूद यह सभी प्रकार के द्वैत, विभाजनों, वियोजनों, विपरीतों, खण्डों, विभेदों, विखण्डनों, द्वन्द्वों, परस्पर विरोधों से परे है (द्वन्द्वातीतम्) ।

बिना किसी बाधा के इस ऊर्जा का मानव शरीर में अभिव्यक्ति (केवलं ज्ञानमूर्त्तिम्) वस्तुतः परम सुख और गहनतम दिव्य आनन्द लाता है (ब्रह्मानन्दं परमसुखदम्) ।

(पुनश्चः–मानव शरीर में इस ऊर्जा की अभिव्यक्ति की करुणा आध्यात्मिक – बाजार में व्यक्तित्व के भ्राचार अर्थात् ''गुरु–अहंकार'' के अशोभनीय गतिविधियों से दूषित हो जाती है ।)

जय आनन्द नन्दन नन्द
सत्य–धर्म त्रिविक्रमाः ।